2-2-1968

गुरुवार मध्य

6.1.68 शनिवार ओम् शान्तिः प्रातःमुरली

बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं और बच्चे भी अपने को आत्मा समझ कर बाप से समझते हैं। जैसे बाप है गुप्त। वैसे ही ज्ञान भी गुप्त है। बच्चे भी गुप्त हैं। किसी की भी समझ में नहीं आता है कि आत्मा क्या है। परमपिता परमात्मा क्या है। तुम बच्चों को तो यह पक्की टेव पड़ जानी चाहिये कि मैं आत्मा हूँ। बाप हम आत्माओं को ही सुनाते हैं। यह बुद्धी से समझना है और रेलवेटिवी में भी आना है। बाकी धन्धा आदि तो सभी को करना है। कोई भी बुलायेंगे तो भी जरूर नाम ले ही। नाम रूप में तो सभी जरूर ही हैं। नाम रूप में हैं तो ही तो बोल भी सकते हैं कुछ भी कर सकते हैं। सिर्फ यही पक्का निश्चय करना है कि मैं आत्मा हूँ। निराकार परमपिता परमात्मा हम को समझा रहे हैं। महिमा सारी निराकार की ही है। अगर साकार में इन देवताओं आदि की महिमा है तो भी इनको तो महिमा लायक बनाया है। ********** महिमा लायक थे। फिर नालायक बने। अब फिर से बाप लायक बनाते हैं इसलिये ही निराकार की महिमा है। विचार किया जाय तो बाप की तो कितनी ही अधिक महिमा है। कितने उनके सर्विस की हुई है। कैसे ड्रामा चलता ही रहता है। यह बहुत समझने की बातें हैं। परमात्मा की तो बहुत ही महिमा गाते हैं। वही ही स्वयं हैं। वह कुछ करते हैं। अभी हम तो बहुत थोड़ी महिमा गाते हैं। महिमा उनकी है बहुत। मुसलमान लोग भी गाते हैं कि अल्लाह मियां ने ऐसा फरमाया है .. अब फरमान भी किसके आगे? बच्चों के आगे फरमाते हैं ना जो कि तुम फिर मनुष्य से देवता बनते हैं। अल्लाह मियां ने किसी प्रति तो फरमान होगा ना। तुम बच्चों को ही समझाते हैं। मियां को कोई को भी पता नहीं है। अब तुमको पता पड़ा है फिर यह ज्ञान गुम हो जायेगा। योगी भी ऐसे कहेंगे। क्रिश्चनस भी ऐसे ही कहेंगे। परन्तु क्या कुछ फरमाया था सो कोई को भी पता नहीं है। बाप तुम बच्चों को अल्फ और बे दो अक्षरों को समझाते हैं। आत्मा की याद की याद भूल नहीं सकती है। आत्मा अविनाशी है तो याद भी अविनाशी ही रहती है। बाप भी अविनाशी है। गाते तो हैं कि अल्लाह मियां ने ऐसा कहा था। परन्तु वो कौन है, क्या कहा था वो कुछ भी नहीं जानते हैं। अल्लाह मियां को तो भिस्त में लेके दिया है। वो समझे जानें ही फिर क्या। बाप कहते हैं कि भक्ति मार्ग में प्रार्थना आदि तो सभी करते ही हैं ना। अब तुम जानते हो कि जो भी आते हैं उनकी सीढ़ी तो उतरना ही है। सतोप्रधान से सतो रजो तमो में आना ही है। पढ़ाने वाला तो है ही। क्राईस्ट लोग आदि जो भी आते हैं उनको बाद में नीचे उतरना ही है। चढ़ने की तो बात ही नहीं। बाप तो आकर सबको चढ़ा देते हैं। मनुष्य का पतित होना तो एक ही है। और तो कोई भी सद्गति करने नहीं आते हैं। सबको कि क्राईस्ट आदि किसको बैठ सुनायेंगे। इस बात को समझने लिये तो कुछ बुद्धी चाहिये। सारा दिन ही इस विचार सागर मंथन में लगे रहना चाहिये। नई-2 युक्तियां निकालती रहती हैं। बुद्धी को निकालते रहना है। सिर्फ बाबा को याद नहीं है। लिखना भी है। पुरुषार्थ अथवा रत्न निकालते हैं। ********** रत्नों को तो निकाले हैं। बैठ कर विचार सागर मंथन करो। लिखो। फिर किसे देवें जो बैठे हैं। कौनसी अच्छी प्वाईन्टस उस लिस्ट में मिस हुई है? इतने ही विचार सागर मंथन करना कहा जाता है। बाकी तो ने पढ़ ही है तो तो भूलता ही रहेगा। बाप कल्प पहले वाली ही नालेज सुनाते हैं। यह भी बच्चे जानते हैं कि जो भी यहां स्थापना करने आते हैं उनको तो नीचे उतरना ही है। तो फिर किसको भी चढ़ायेंगे ही कैसे। सीढ़ी से नीचे उतरना ही है। पहले सुख फिर दुःख में आना है। यह नाटक बहुत वण्डरफुल बना हुआ है। इसमें विचार सागर मंथन करने की बहुत जरूरत रहती है। वो लोग तो कोई सद्गति करने के लिये नहीं आते हैं। वो तो आते ही हैं सिर्फ धर्म स्थापन करने। ज्ञान का सागर तो एक ही है। और कोई में भी ज्ञान नहीं है। ड्रामा में सुख और दुःख का खेल तो सभी के ही लिए है। दुःख में भी सुख आता है। ड्रामा में पार्ट बजाते हैं तो जरूर कुछ तो सुख होना चाहिए ना। बाप कोई दुःख — थोड़ेई स्थापन करेंगे। बाप तो सभी को सुख देते हैं। विश्व में शान्ति हो जाती है। दुःखधाम में तो शान्ति

शान्ति नहीं सकती है। शान्ति तो फिर से मिलनी है जबकि वापसी में फिर से शान्ति। बाप बैठ समझाते हैं कि यह तो कभी भुलना नहीं चाहिये। हम बाप के साथ हैं। बाप आया हुआ है असुर से देवता बनाने। कुम्भकरण की भी तीसरी चित्र में दिखाई गई है नां। इस समय ऐसी असुर है जंगली जनावर है। यह देवतायें सदगति में रहते हैं तो वाले भी आत्मायें मूलवतन में रहती हैं। ड्रामा में सबसे बड़ी कमाल ही है बेहद के बाप की। तुमको एकदम परिजात बना देते हैं। पढ़ाई से परी बनते हैं। यह बहुत मनन और विचार सागर मंथन करने की बातें हैं। भक्ति मार्ग में तो कुछ भी समझ नहीं है। बाप बैठ सिखाते हैं। कोई हनुमान को कोई गणेश को कोई किसीकी वै० पूजा करते हैं। अब उनको याद करने से फायदा ही क्या? बाप ने समझाया है कि इस समय के मनुष्य तो हैं ही सभी जनावरों के मिसल। बाप ने कहा था कि महाराथ तो उन्होंने तो फिर हाथी पर ही बैठ स्वारी दिखाई है। तो यह सभी बातें बाप बिना और तो कोई भी समझा नहीं सकते हैं। इतने बड़े-2 आदमी हैं तो उनको कितना मान रखते हैं। कितने लोग स्वागत करते हैं। है कौन? एक दम ही तमोप्रधान बन्दर बुद्धी। बन्दरों का बन्दर ही स्वागत कर रहे हैं। तुम थोड़े ही ऐसे किसीका स्वागत करेंगे। क्योंकि तुम तो जानते हो कि यह सारा झाड़ जड़जड़ी भूत है। सभी पतित भ्रष्टाचारी हैं। किस की पैदाइश है नां। भूत है नां। तुमको पता है कि भूत से भी चीजें पैदा होती हैं। मनुष्य के किचड़े से खाद बनती है। जो ही फिर निकलती है। गन्दे नाले जाकर खेती में पड़ते हैं। उसकी ही फिर खाद बनती है। वहां पर तो ऐसी चीजें होती नहीं हैं। वहां पर तो नेचरली ही फर्स्ट क्लास बहुत मीठी-2 चीजें निकलती हैं। तो यह फीलिंग आनी चाहिये स्वर्ग में तो गन्दगी की बात ही नहीं सकती है। तो ही बाप कहते हैं कि तुम तो पदमपति बनते हो। सुदामा पदमपति बना था नां। अपने ही किया नां। बाप कहते हैं कि तुम इस पढ़ाई से कितना ऊंचा बनते हो। वो गीता तो सभी सुनते हैं और पढ़ते रहते हैं। वह भी पढ़ता था परन्तु जबकि बाप ने बैठ कर सुनाया तो पण्डर खाया। बाप की गीता से तो सदगति हुई थी। यह मनुष्यों ने क्या बैठ बनाया है। कहते हैं कि अल्लाह मियां ने ऐसे कहा परन्तु समझते कुछ भी नहीं। अल्ला कौन है। देवी देवता धर्म वाले ही भगवान को नहीं जानते तो दूसरे जो पीछे आये हैं वह कैसे जान सकते। सर्वशास्त्र मई गीता ही रांग कर दी हैं। तो बाकी फिर शास्त्रों में क्या होगा। बाप ने तो तुम बच्चों को सुनाया जो प्रायः लोप हो गया है। अभी तुम बाप से सुन कर पढ़ कर देवता बन रहे हो। पुरानी दुनिया का हिसाब किताब तो सब को चुकुत करना ही है। फिर आत्मा पवित्र बन जाती है। अन्दर उनका भी कुछ हिसाब किताब होगा। तो वह चुकुत होगा। हम ही पहले2 जाते हैं फिर पहले आते हैं। सजा तो सब आपस हिसाब किताब चुकुत करेंगे। इन बातों में भी जाना नहीं है। यह तो निश्चय कराओ सर्व का सदगति दाता बाप, टीचर गुरु एक ही है। वह हैं अशरीरी। अब आत्मा में कितना ज्ञान है। ज्ञान का सागर, सुख का सागर, शान्ति का सागर उनकी कितनी महिमा है। हैं वह आत्मा ही। आत्मा ही आकर फिर शरीर में प्रवेश करती हैं। सिवाय परम पिता परमात्मा के और कोई भी आत्मा की तो महिमा नहीं करेंगे। और सभी शरीर धारियों की महिमा करेंगे। यह है सुप्रीम आत्मा। बिगर शरीर आत्मा की महिमा सिवाय एक निराकार बाप के और कोई की भी नहीं है। आत्मा में ही सब संस्कार हैं ना। संस्कार में कितनी ज्ञान का सागर है। प्यार का सागर, शान्ति का सागर... यह आत्मा की ही महिमा है। कोई मनुष्य की महिमा नहीं है। कृष्ण की हो न सके। वह तो पहला नम्बर प्रिन्स है। बाप से तो सारा नालेज है। जो आकर बच्चों को वर्सा दे देते हैं। इसलिए महिमा भी गाई जाती है। शिवजयन्ती ही तुल्य है। धर्म स्थापक आते हैं वह क्या करते हैं। समझो क्राईस्ट आया। उस समय क्रिश्चन तो हैं नहीं। किसीको नालेज देंगे क्या देंगे। कर के कहेंगे अच्छी चलन चलो। सो तो मनुष्य समझाते रहते हैं। सद्गति नालेज कोई दे न सके। उनको तो अपना2 पार्ट मिला हुआ है। सतो, रजो, तमो में जरूर आना ही है।

आने से ही क्राईस्ट की चर्च कैसे बनेगी। जब बहुत होंगे तो भक्ति मार्ग शुरू होगा। तब चर्च आदि बनावेंगे। इसमें तो बहुत पैसे चाहिए ना। लड़ाई में भी पैसे चाहिए। तो बाप समझाते हैं इस कितने ढेर मनुष्य हैं। मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ है ना। झाड़ कब इतना बड़ा लाखों वर्ष का होता है क्या। हिसाब ही नहीं बन सकता। बाप समझाते हैं हे बच्चों तुम कितने बेसमझ बन गये थे। अब फिर समझदार भी तुम बनते हो। तुम पहले से ही तैयार हो आते हो राज्य करने। वह तो अकेले ही आते हैं फिर वृद्धि होती है। झाड़ का फाउन्डेशन थूर है। देवी देवता धर्म। उनसे फिर तीन तबके निकलते हैं। फिर उन से वृद्धि होती है। छोटे2 जो मठ-पंथ आते हैं उनकी भी कुछ न कुछ महिमा हो जाती है। (अरविन्दो घोष की हिस्ट्री) पाण्डीचेरी में जाये वेष बदल लिया। फिर अपनी आश्रम जमाये लिया। समझा जाता है कोई अच्छी सोल प्रवेश हुई। या उनका हिसाब किताब ही ऐसा था। परन्तु उन से भी तो फायदा कुछ भी नहीं है। लाखों उनकी मुरिद बने। परन्तु सीढ़ी उतरते दुर्गति को पाते ही रहते हैं। सब की सीढ़ी उतरनी ही है। कहेंगे शास्त्रों में ऐसे लिखा हुआ है। परन्तु बाप समझाते हैं गीता भाई-बाप जो झूठी तो और सब शास्त्र भी झूठे ही होंगे। उनमें फिर क्या होगा। कैसे कहते हैं गीता पढ़ते2 दुर्गति को पा लिया है। तो और शास्त्र भी पढ़ते2 नीचे ही उतरते हैं। यह बुद्धि से समझने की बातें हैं। कुरान आदि पढ़ते नीचे ही उतरते हैं। ऊपर तो कोई जावेंगे नहीं। नीचे ही उतरना ही है। सिर्फ मनुष्य समझेंगे यह भक्त आदमी है। परन्तु हैं थोड़े ही। उनसे तो और ही ठगत बनते हैं। अभी समझते हैं गीता आदि पढ़ते नीचे ही उतरते आये हैं। उन में ताकत कुछ नहीं। कहा जाता है रिलीजन इज़ माईट। बाप जो धर्म स्थापन करते हैं वह तो जरूर बहुत ऊंचा होगा। कितनी ताकत है बाबा के इस धर्म स्थापन करने में। बाप कितना सर्वशक्तिवान है। सब वर्सा तुमको दे देते हैं। मनुष्यों ने लाखों वर्ष आयु कह दी है। तो कुछ भी समझते नहीं। बाप तुमको सारे विश्व के मालिक बनाते हैं। फिर भी बच्चे घड़ी2 भूल जाते हैं। तरकीब वस्तु है ना। कोई अच्छी गीत याद करते हैं तो पद भी ऐसा पाते हैं। तुम्हारे एमआबजेक्ट ही हैं नर से नारायण बनना। तुम बच्चों को तो बहुत खुशी होनी चाहिए। परन्तु बन्दर बुद्धि बदलते ही नहीं। कहते हैं शेर के दूध लिए सोने का बर्तन चाहिए। यहां तो हैं ठीकर के बर्तन। ठोकर लगे और टूटे। फेट2 हार्ट-फेल हो जाते हैं। वहां ऐसे थोड़े ही होता है। वहां तो जब आयु पूरी होगी बोलकर शरीर छोड़ेंगे खुशी से। यहां ठीकर कितना जल्दी टूट जाते हैं। ठीकर बुद्धि बन पड़े है। अब तुमको ठीकर से ठाकुर बनाते हैं बाप। तुम्हारे में भी कोई तो जैसे सैंसीबुल हैं, कोई तो जैसे ठीकर है। कुछ भी बुद्धि में धारण नहीं होती। कितनी बड़ी पढ़ाई है। सारे वर्ल्ड की यूनिवर्सिटी है। यह तो सिर्फ नाम लिख देते हैं। विश्व-विद्यालय। परन्तु हैं थोड़े ही। विश्व माना सारी दुनिया के लिए तो यह ही हैं। ठीकर से ठाकुर सिर्फ तुम ही बनते हो। अभी तुम समझते हो बराबर हम ठीकर बुद्धि थे। बाप कितना ऊंच बनाने पुरुषार्थ कराते हैं। बाप कहते हैं हमारा तो काम ही पुरुषार्थ कराना। राजधानी में नम्बरवार तो होंगे ना। फिर भी तारना करते हैं। तरस तो पड़ता है ना। ज्ञान में आने बाद विकार भगिरते हैं तो फिर ऊंच पद पाना बहुत मुश्किल है। सदगुरु के निन्दा कराने वाले ठौर न पायेंगे सके। सब से कड़ा है काम शत्रु। बच्चे जन्मपत्री भी बताते हैं। बाबा कहते हैं नंगन हुये हो तो बताओ। फिर हल्के हो जावेंगे। बाकी थोड़ा बहुत है वह योगबल से भी कट जावेगा। मुख्य है हीयाद का बल। जिससे ही पाप कट जावेगा। इस शरीर को भी भूल जाना है। यह तो पुराना शरीर है इनको अब क्या करेंगे। सब तमोप्रधान हैं। झाड़ी की कब इतनी बड़ी आयु सुना? (लाखों वर्ष) कोई मान नहीं। परन्तु मनुष्यों की बुद्धि ऐसी हो गई है जो सब बातों में हां हां करते रहते हैं। वह शास्त्रों की अथार्टी बने हैं। कितना नशा रहता है। बाबा कहते हैं यह तो जो आपको ईश्वर कहलाते हैं बड़ी हिप्पोक्रेसी पर जैसे हैं। जो अपने को ईश्वर कहलाये अपनी पूजा बैठ कराते हैं। आगे ऐसे नहीं कहते थे। अगर युगे-युगे अवतार कहते हैं तो भी 4 युग हैं ना फिर तो 4 अवतार कहें। पांचवां पुरुषोत्तम युग को

V. V. I. P.

जानते ही नहीं। यह फिर कितने अवतार कह देते हैं। पूरा न बताये सकते तो कह देते ही हम ही भगवान हैं इसलिए दिखाते हैं थम्ब से नरसिंघ निकला। ... ऐसा चित्र दिखाते हैं। बाप समझाते हैं अभी तुम असुर से देवता बनते हो। अभी तो रावण राज्य है ना। रामराज्य तो होता ही है सतयुग में। सतयुग त्रेता वायसलेस दुनिया थी। फिर विषय दुनिया कब शुरू हुई यह किसको भी पता नहीं है। बिलकुल ही तुच्छ बुधि हैं। अभी तुम नालेज पाकर आदि मध्य, अन्त को जान गये हो। बाप को नालेजफुल कहा जाता है। कहते हैं गाड इज़ नालेजफुल। परन्तु क्या नालेज है यह नहीं जानते। तुमको अर्थ नालेज मिल रहा है। भाग्यशाली रथ तो जरूर चाहिए ना। बाप कहते हैं मैं साधारण तन में आता हूँ। तब यह भाग्यशाली बनते हैं। नहीं तो दुर्भाग्यशाली था। कलियुग दुनिया में सभी दुर्भाग्यशाली ही हैं। सतयुग में सब भाग्यशाली ही होंगे। अभी तुमको ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है। जिससे तुम ऐसा बनते हो। ज्ञान तो एक ही बार मिलता है। भक्ति में तुम धक्के खाते रहे। अंधियारा है ना। ज्ञान है दिन। तुम धक्का नहीं खा सकते हो। बाप कहते हैं भल घर में ही गीता पाठशाला खोल दो। बहुत ऐसे भी कहते हैं हम तो नहीं उठाते हैं - दूसरों के कल्याण लिए हम जगह देते हैं। यह भी अच्छा है। वहां तो बहुत ही सावधानी रखना चाहिए। यह है होलीएस्ट आफ दी होली वैलाय। जहां शान्ति में तुम बाप को याद करते हो। तुमको अपनी शान्ति धाम जाना है। बाप को बहुत याद करना है। सतयुग में भी तुमको शान्ति थी। 21 जन्म लिये तुम सुख शान्ति का वर्सा पाते हो। वैहद का बाप है वैहद का वर्सा देने वाला। तो ऐसे बाप को पूरा पक्का करना चाहिए। अहंकार न आना चाहिए। यह भी गिरा देती है। बहुत ही कैपिल अवस्था है। हठ भी नहीं। देहाभिमान को हठ कहा जाता है। बहुत ही मीठा बनना है। देवतायें कितने मीठे हैं। कितनी कशिश होती है। बाप तुमको ऐसा बनाते हैं तो ऐसे बाप को कितना याद करना चाहिए। बाबा आप को तो बनाते हैं। हमको क्या पता आत्मा क्या चीज़, परमात्मा क्या चीज़ है। नम्बरवन ही कहते हैं हम नहीं जानते गीता वाले फिर क्या जानेंगे। बाप क्या से क्या बनाते हैं। तुम बच्चों को भी सुनिश्चय कर बहुत ही खुश होना चाहिए। इनको तो यह पक्का निश्चय है हम यह शरीर छोड़ जायें यह बनेंगे। एम्बाडेसेट का चित्र तो पहले2 देखना चाहिए। यह तो पढ़ाने वाला देहधारी टीचर होते हैं। यहां पढ़ाने वाला है निराकार बाप। आत्माओं को ही पढ़ाते हैं। यह अन्दर में चिन्तन करने से ही बहुत खुशी होती है। इनको भी नशा रहता होगा नारायण का रूप है इसलिए भाग्यशाली कहते हैं। तुम हो पोते। यह भी वर्सा लेंगे ना। ब्रह्मा तो विष्णु, विष्णु से ब्रह्मा कैसे होता है यह बन्दर फल खाते तुम ही सुनते हो जो फिर धारण कर और सुनाना है। बाप तो सब को विश्व का मालिक बनाते हैं। बाकी यह समझ सकते हैं राजाई करने लायक कौन बनेंगे। बाप का तो फर्ज़ है बच्चों को ऊंच बनाना। विश्व का मालिक बनाते हैं। चण्डाल बनने वाले भी विश्व के मालिक तो हैं ना। बाप कहते हैं मैं थोड़े ही विश्व का मालिक बनता हूँ। इस मुख द्वारा बाप बैठ नाले ज सुनाते हैं। आकाशवाणी कहते हैं परन्तु अर्थ थोड़े ही जानते हैं। आकाशवाणी देहली से सुना। ऐसे क्यों नहीं कहते रेडियो में प्रोग्राम सुनो। आकाशवाणी तो यह है ना। बाप ऊपर से आते हैं। इस गऊ मुख द्वारा सुनाते हैं। इस मुख द्वारा वाणी निकलते हैं। बच्चे बहुत मीठे होते हैं, कहते हैं बाबा आज यह टोली तो खिलाओ बाप कहेंगे बड़ी टोली। (बहुत ही टोली) बच्चे अच्छे हैं कहेंगे बाबा हम बच्चे भी हैं सर्वेन्ट भी हैं। बाबा को बड़ी खुशी होगी। बाकी उल्लू पाठी कहेंगे तो ... एकदम उल्टे जैसे लटके हैं जो सुल्टे होते ही नहीं। बन्दर से बन्दर लायक बनते ही नहीं। माया ने उल्टा लटकाये दिया है। बाप फिर सुल्टा बनाते हैं। ओम।

अच्छा मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति रूहानी बाप व बाबा का याद प्यार गुड मोर्निंग।

मीठे, मीठे रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते।

-: *****ओमशान्ति-: *****: -